पाठ - 17: पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ

मूल विषय

यह एक व्यंग्य-रचना है जिसके लेखक प्रसिद्ध व्यंग्यकार श्री हरिशंकर परसाई हैं। इसमें एक ओर दो पीढ़ियों के बीच अंतर और संघर्ष है तो दूसरी ओर कर्म किए बिना फल प्राप्ति की आकांक्षा रखने वालों पर कटाक्ष या चोट भी है। साथ ही, यह साहित्यिक क्षेत्र के वृद्धों और युवकों की मानसिकता को स्पष्ट करती है।

मुख्य बिंदु

- **व्यंग्य** :- जब कही गई बात का अर्थ कुछ और हो तथा जो किसी विसंगति (यानी जो होना चाहिए, वह न होकर कुछ और हो) पर चोट करता हो - व्यंग्य कहलाता है, व्यंग्य में शब्दों की गहरी मार होती है जो ऊपर से नीचे तक व्यक्ति को झकझोर कर रख देती है। व्यंग्य में बात करने का अर्थ है विचारों को कुछ इस प्रकार प्रस्तुत करना कि उसका प्रभाव सीधा दिल और दिमाग पर हो, साथ में भिन्न प्रकार की हँसी भी आए और वह हँसी ऐसी करारी चोट पैदा करे कि अगला व्यक्ति तिलमिला कर रह जाए और उस बात पर गहराई से सोचने पर मज़बूर हो जाए।

- **शीर्षक की सार्थकता** :- पीढ़ियाँ वय (उम्र) और अनुभव के भेद को दर्शाती हैं। पुरानी पीढ़ी के अंतर्गत वृद्ध माता-पिता, गुरु आदि आते हैं तथा नई पीढ़ी के अंतर्गत युवा, शिष्य, पुत्र आदि आते हैं। हर पीढ़ी की अपनी अलग सोच होती है, जो पीढ़ी के बदलते ही नया रूप ग्रहण कर लेती है।गिट्टियाँ होती हैं ढेले, छोटे-छोटे पत्थर या इसी प्रकार का कोई अन्य तत्त्व। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी को गिट्टियाँ मारती है, पत्थर मारती है अर्थात् प्रताड़ित करती है। नई पुरानी पीढ़ियों में कोई भी अपने को दूसरे से नीचा नहीं देखना चाहता, इसीलिए दोनों में संघर्ष चलता रहता है। संघर्ष प्रायः विचार, सोच, मत के धरातल पर होता है। लेखक ने संकेत से इसे गिट्टियाँ कहा है।अपने विचारों को दूसरों पर लादने के कारण इस रचना का यह शीर्षक 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' सार्थक लगता है।

- **तत्वों के आधार पर समीक्षा** :-

1. भूमिका - इस व्यंग्य के आरंभ में लेखक ने शरीर से क्षीण होते, साहित्यिक क्षेत्र के ऐसे बूढ़ों का उल्लेख किया है, जिन्होंने अपने जीवन में भरपूर सुख और प्रसिद्धि को प्राप्त की है लेकिन इन सुखों और प्रतिष्ठा को वे छोड़ना नहीं चाहते। होना तो यह चाहिए कि इन बूढ़ों को खुशी के साथ सारा मोह तथा लोभ त्यागकर सब कुछ अगली पीढ़ी को सौंप देना चाहिए, जिससे कि उसके विकास का मार्ग तैयार हो सकें। परंतु यहाँ ऐसा नहीं हैं।

2. विषय-वस्तु - लेखक बताता है कि एक दिन युवाजन उन वृद्धों के पास आए और उनसे निवेदन किया कि वे बहुत वृद्ध तथा यशस्वी हो चुके हैं। अब उन्हें आराम करना चाहिए और आशीर्वाद देते रहना चाहिए, क्योंकि अब वे पूजनीय हो गए हैं।परंतु उन्हें शंकाएँ हैं कि उनके यश, उनके झंडों, भोग, आमदनी तथा उनके प्रति श्रद्धा का क्या होगा? इसका समाधान युवकों ने बहुत आसानी से कर दिया। उन्होंने वृद्धों को आश्वासन दिया कि उन्हें रोज़ भोग यानि श्रेष्ठ भोजन आदि उपलब्ध होता रहेगा। मंदिर में उनकी आरती उतारकर श्रद्धा-भाव प्रकट किया जाता रहेगा।एक वयोवृद्ध ने बहुत महत्त्वपूर्ण सवाल किया कि 'पर हम कर्म के बिना कैसे जीवित रहेंगे।' इस पर युवकों ने सुझाव दिया कि आप वृद्ध लोग एक-दूसरे को अपने विगत जीवन के संस्मरण सुनाएँ, जिसकी रिकार्डिंग करके उसकी पुस्तकें छपवा दी जाएँगी। आपने ऐसे अनेक वयोवृद्ध

व्यक्तियों को देखा होगा जो अपने अतीत की प्रशंसा बहुत करते हैं और उसके संस्मरण सुनाते हैं। तो वे बूढ़े भी इसी लायक रह गए हैं कि आपस में बैठकर बीती बातें, किस्से और रोचक संस्मरण सुनाएँ। वृद्ध सहमत हो गए और उन्होंने देवता बनना मंजूर कर लिया। व्यंग्य के अंतिम भाग में वयोवृद्ध साहित्यकारों को देवता बनाकर मंदिरों में प्रतिष्ठित कर दिया जाता है। देवता बनकर प्रतिष्ठित होने के बाद वृद्धों का ध्यान युवकों पर गया। वे उनके बारे में बात करने लगे कि वे बाहर की दुनिया का आनंद ले रहे होंगे और हम मंदिर रूपी कारागार में बंद हैं। बाहर युवकों में से कोई नाटक देख रहा होगा, कोई पकवान खा रहा होगा। सब खुश होंगे, मस्त होंगे। यहाँ पर लेखक कहना चाहता है कि वृद्धजन देवता तो बन गए लेकिन मोह को न छोड़ पाए। इसलिए युवकों के जीवन की खुशी और उत्साह के प्रति उनमें ईष्र्या या जलन का भाव उत्पन्न होता है। लेकिन इनमें एक वृद्ध ऐसा है जो दूसरों की तरह नहीं बल्कि समझदार है। वह कहता है 'वे युवक हैं, तरुण हैं, खाने-खेलने लायक हैं। लेकिन दूसरे देवताओं को यह बात पसंद नहीं आई, उन्होंने प्रतिवाद में कहा कि जो हमारा था उस पर युवकों ने अधिकार जमा लिया। जहाँ कभी हम थे वहाँ वे हैं, हमें केवल मूर्ति बनाकर रख दिया गया है। लेखक भी चाहता है कि बुजुर्गों को अपनी स्थिति और क्षमता का बोध होना चाहिए। दूसरे के प्रति सहानुभूतिपूर्ण दृष्टि रखनी चाहिए, खासतौर पर युवाओं के प्रति।

3. उपसंहार - अंत में देवताओं ने सलाह करके जो निष्कर्ष निकाला वह शाम को युवकों के आने पर ज़ाहिर हुआ। जैसे ही युवक थाल में मिठाई सजाकर लाए तो देखा कि देवता लोग चबूतरे पर खड़े हैं और उन्होंने युवकों पर पत्थर बरसाने शुरू कर दिए। युवकों ने इस पथराव का कारण पूछा। देवताओं ने कहा तुमने हमें उन सबसे रहित कर दिया जो कल तक हमारा था। अब युवकों ने स्पष्ट किया कि उन सबसे वंचित रहने का मूल कारण उनकी बढ़ती उम्र, ढलती शक्ति आदि ने किया है-हमने नहीं। फिर भी हम तुम्हें सम्मान दे रहे हैं और तुम हो कि पत्थर से हमें चोट पहुँचा रहे हो, हमें अपमानित कर रहे हो। इस पर देवताओं ने पहले से तैयार अपना फ़ैसला सुना दिया कि जिन राहों पर हम चले थे, उन पर युवक न चलें, जो हमारा भोज्य था, वह युवक नहीं खाएँगे तथा झंडे भी हमारे ही फहराये जाएँगे, युवकों के नहीं। नए युग के युवकों ने देवताओं का फैसला मानने से इनकार कर दिया जिस पर कुपित हो देवताओं ने उन्हें पत्थर मारने शुरूकर दिए और जैसी कि उम्मीद थी, एक युवक ने आव देखा न ताव, पीपल के पेड़ पर फहरा रहे देवताओं के झंडों को ही फाड़ कर फेंक दिया। दोनों ओर से हमले होने लगे।

4. उद्देश्य - यह पीढ़ियों के संघर्ष को उजागर करता है। नई पीढ़ी को दायित्वहीन कहने वाली पुरानी पीढ़ी दरअसल नए लोगों पर दायित्व सौंपना ही नहीं चाहती। उसे भय रहता है कि कहीं हमारे वर्चस्व को समाप्त करके नई पीढ़ी अपना वर्चस्व स्थापित न कर ले। हम समझ सकते हैं कि पुरानी पीढ़ी की यह लालसा और झूठा भय किस प्रकार समाज की युवा-पीढ़ी के विकास, उसकी स्वतंत्राता और सुख-समृद्धि को प्रभावित करती है। जिस समाज में ऐसी पुरानी पीढ़ी होगी उस समाज के युवक कुंठित, आत्म विश्वास विहीन तथा अकेलेपन से ग्रस्त होकर समाज विरोधी होंगे।

5. भाषा-शैली - पूरा व्यंग्य आम बोलचाल की भाषा में लिखा गया है। इसमें वाक्य छोटे-छोटे हैं, जो संवाद के रूप में लिखे गए हैं। ये संवाद विषय के अनुरूप और सटीक हैं। कहीं-कहीं तो लेखक ने हाज़िरजवाबी का परिचय दिया है। लेखक ने स्थान-स्थान पर मुहावरों का सटीक

प्रयोग किया है, जैसे-आनाकानी करना आदि। यहाँ लक्षणा और व्यंजना का खूब प्रयोग हुआ है।

अपना मूल्यांकन कीजिए

1. व्यंग्य का साहित्य में क्या महत्व है? 'पीढ़ियाँ और गिट्टियाँ' एक व्यंग्य रचना है, सिद्ध कीजिए।
2. नई पीढ़ी और पुरानी पीढ़ी की सोच में क्या अंतर है?
3. पुरानी पीढ़ी के लोग नई पीढ़ी को आगे क्यों नहीं आने देते?
4. लेखक ने किस पर व्यंग्य किया है और क्यों ? पाठ से उदाहरण देते हुए अपनी बात सिद्ध कीजिए।